ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 169-170

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-IV, Issues-22, YEAR- Oct.-Dec.-2021

श्री रामचरितमानस में शैक्षिक विचारों का अध्ययन

डॉ0 सत्यब्रत सिंह

विभागाध्यक्ष– कालेज बी0टी0सी0, डी0एल0एड्0, बलदेव श्रीधर महाविद्यालय भवरहाँ–पाण्डेयपुर, गाजीपुर, (उ0प्र0), भारत

Received- 02 .12. 2021, Revised- 07 .12. 2021, Accepted - 11.12.2021 E-mail: aaryvart2013@gmail.com

सारांशः ***शिव जी ने पार्वती से कहा कि आदि नारायण श्री विष्णु से ब्रहमाजी, ब्रहमा से मरीचि, मरीचि से कश्यप, कश्यप से सूर्य, सूर्य से श्राद्धदेव रवैवस्वत मनु कहा जाता है। इनसे इक्ष्वाकु आदि अनेक प्रतापी राजा हुए। यह सूर्यवंश, इक्ष्वाकु के नाम पर इक्ष्वाकुवंशी कहलाया। इन्हीं के वंश में आगे चलकर दिलीप हुए, दिलीप से रघु, रघु से अज, अज से दशरथ जो इक्ष्वाकुवंश के बासठें राजा थे। इससे पूर्व 61 राजा सूर्य वंश में हो चुके थे। इनके बाद भी साठ राजा और सूर्यवंश के हुए थे। तनय पुत्र सुमित्र सूर्यवंश के अन्तिम राजा थे। मरू नामक राजा बद्रिका आश्रम में तपस्या कर रहे हैं जो सत्ययुग आने पर अपने इस सूर्यवंश का विस्तार करेंगे।***

कुंजीभूत शब्द– इक्ष्वाकु, सूर्यवंश, इक्ष्वाकुवंशी, तपस्या, सत्ययुग, आशीर्वाद, मार्गशीर्ष, हस्ताक्षर, साष्टांग प्रणाम।

काशी में तुलसीदास जी रामकथा कहने लगे, उन्हें एक प्रेम मिला हनुमान जी का पता बताया, हनुमान जी से मिलकर तुलसीदास जी ने रघुनाथ जी का दर्शन करने की इच्छा प्रकट की। संवत् 1628 में हनुमान जी की आज्ञा से तुलसीदास जी अयोध्या के लिए चल पड़े। माघ मेला के कारण वे प्रयाग में ठहरें छः दिन बाद वट वृक्ष के नीचे भरद्वाज और याज्ञवल्क्य मुनि के दर्शन हुए। सूकर क्षेत्र में गुरू से कथा सुनी। वहाँ से काशी आकर संस्कृत भाषा में पद्य रचना करने लगे। परन्तु जितना पद्य लिखते रात्रि में सब लुप्त हो जाते। आठवें दिन भगवान शंकर ने स्वयं में आदेशित किया। अपनी भाषा में काव्य रचना करो। वे उठकर बैठ गये शिव पार्वती उनके सामने प्रकट हुए। तुलसीदास जी साष्टांग प्रणाम किया। शिव जी ने कहा तुम अयोध्या जाकर हिन्दी में काव्य रचना करो। मेरे आशीर्वाद स्वरूप तुम्हारी कविता सामवेद के समान फलवती होगी। गौरीशंकर अन्तर्धान हो गये। तुलसीदास जी अयोध्या आ गये।

संवत 1631 में कथा रचना प्रारम्भ हुआ, उस समय के दिन वैसा ही योग था। जैसा त्रेतायुग में राम जन्म के समय था। दो वर्ष सात माह छब्बीस दिन में ग्रन्थ की समाप्ति हुई। सं0 1633 में मार्गशीर्ष के शुक्ल पक्ष में राम विवाह के दिन सातों काण्ड पूर्ण हो गये। तत्पश्चात् तुलसीदास जी काशी आये, वहाँ भगवान विश्वनाथ और माता अन्नपूर्णा को रामचरित मानस सुनाया । रात को पुस्तक श्री विश्वनाथ जी के मन्दिर में रख दी गयी जब सुबह पट खोला गया तो उस पर लिखा पाया गया "सत्यं शिवं सुन्दरम्" नीचे भगवान शिव की हस्ताक्षर थी।

ईर्ष्यालु पण्डित जन पुस्तक नष्ट करने का विचार करने लगे। चारों को पुस्तक चुराने के लिए कुटी में भेजा तो वहाँ धनुष वाण लिए दो वीर पहरा दे रहे थे। उनके रूप श्याम गोरे वर्ण देखकर मन शुद्ध हो गया, भजन करने लगे।

जब पण्डितों को कोई उपाय समझ में नहीं आया तब मधुसूदन सरस्वती को पुस्तक देखने की प्रेरणा दी। मधुसूदन सरस्वती जी उसे देखकर बड़े प्रसन्न हुए और अपनी सहमति अंकित कर दी।

आनन्द कानने हास्मि अज्मस्तुलसी तदः ।
कवितामंजनी भाँति रामभ्रमर भूषिताा ।।

इस काशी रूपी आनन्दवन में तुलसीदास चलता फिरता तुलसी का पौधा हैं उसकी कवितारूपी मंजरी बड़ा ही सुन्दर है, जिस पर राम रूपी भंवरा सदा मंडराया करता है।

एक परीक्षा और ली गयी भगवान विश्वनाथ के मन्दिर में सबसे ऊपर वेद उसके नीचे शास्त्र : शास्त्र के नीचे पुराण, पुराण के नीचे श्री राम चरित मानस रखा गया। मन्दिर बन्द कर दिया। प्रातःकाल मंदिर खोला गया तो देखा श्री राम चरित मानस वेदों के ऊपर रखा है पण्डित जन लज्जित होकर तुलसीदास जी से क्षमा माँगकर चरणोंदक लिया। श्रीराम चरित मानस सर्वोपरि ग्रन्थ हुआ। इस प्रकार श्री राम चरित मानस की रचना बाबा गोस्वामी तुलसीदास जी ने सात काण्डों में की है। पृथ्वी का भार उतारने के प्रभु अवतरित होते हैं। जब भगवान में अवतरित होने के लिए कहा तब ब्रहमाजी के आदेशानुसार देवता गन्धर्व अप्सरा सब बानर, भालू, रीढ़ आदि के रूप में जन्म लेने को कहा शिवगणों ने भी वानर रूप में जन्म लिया। विश्रवा एवं सुमाली पुत्री कैकेयी से दशग्रीव, कुम्भकर्ण, सूर्पणखा, विभीषण हुए। शिव एवं ब्रहमा की तपस्या करके कूट एवं दुष्ट प्रवृत्त के हुए। रावण भयदावन पुत्री मन्दोदरी से विरोचन पुत्री ब्रजबाला से कुम्भकर्ण, गन्धर्वराज शैलूष महात्मा की पुत्री शम्भा से विभीषण की विवाह किया। कालन्मा पुत्र विद्युज्जिहव से सूर्पणवा का विवाह कया।

ब्रहमादि देवताओं के पुकार पर आकशवाणी में अंश सहित अवतार लेने की बात हुई।

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-IV, Issues-22, YEAR- Oct.-Dec.-2021

असन्ह सहित मनुज अवतारा। लेहऊँ दिनकर बस उदारा।।
असन्ह सहित देह धरिताता। करिहऊँ चरित भगत सुखदाता।।

श्री रामावतार तीनों अंशों के समेत चतुविर्गह में प्रकट हुआ किसके अंश से कौन विग्रह हुआ। इसका निर्णय नामकरण के समय गुरू श्री वशिष्ठ जी ने किया है।

सो सुख धाम राम असनामा। अखिल लोकदायक विश्रामा।।
विश्वभरन पोषन का जोई। ताकर नाम भरत ऊस होई।।
जाके सुमिरन तेरिपु नासा। नाम शत्रुहन वेद प्रकाशा।।
लच्छन धाम राम प्रिय सकल जगत आधार।
गुरू वशिष्ठ तेहि राखा लछिमन नाय उदार।।

वैदिक संस्कारों उपरान्त श्रीमान सभी भाइयों के सहित गुरू वशिष्ठ के आश्रम रहकर थोड़े समय में ही सारी विद्याएँ अस्त्र, शस्त्र आदि सब ग्रहण कर लिया। गुरू गृह पढ़न गए रघुराई। अल्पकाल विधा सब भाई ।।

एक बार माता पलना में सुलाकर इष्टदेव की पूजा करने गयी। पुनः पाक गृह में गयी फिर माता नैवेद्य चढ़ाया था वहाँ आकर देखा वही लड़का खा रहा है। पलने के पास गयी, उसे सोता पाया भ्रम पड़ गयी।

इह उहीं दुइ बालक देखा। मतिभ्रम मोर कि आन विसेषा।।
प्रातःकाल उठि कै रघुनाथ। मातुपिता गुरू नावहि माथा।
आयुष माणि करहि पुर काजा। देखि चरित हषइ मनराजा।।

इसी समय विश्वामित्र जी आकर राम लछिन करे यज्ञ की रक्षा हेतु ले गये। जनक के सीय स्वयंवर में चारों भाइयों का विवाह हुआ।

राम को युवराज बनाने के लिए गुरू वशिष्ठ ने निवेदन किया।
नाथ रामु करिअहि जुबराजु । कहिअ कृपा करि करि असमाजू।।

सम्पूर्ण रूप से श्रीरामचरित मानस सात काण्ड में श्री गोस्वामी तुलसीदास जी ने विस्तार रूप से लिखा है।
1. बाल काण्ड 2. अयोध्या काण्ड 3. अरण्य काण्ड 4. किष्किन्धा काण्ड 5. सुन्दर काण्ड 6. लंका काण्ड 7. उत्तर काण्ड ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. श्री रामचरित मानस गीताप्रेस गोरखपुर उ0प्र0।

*****